Empire

मराठा साम्राज्य

MARATHA EMPIRE
1759 AD
MARATHA
EMPIRE

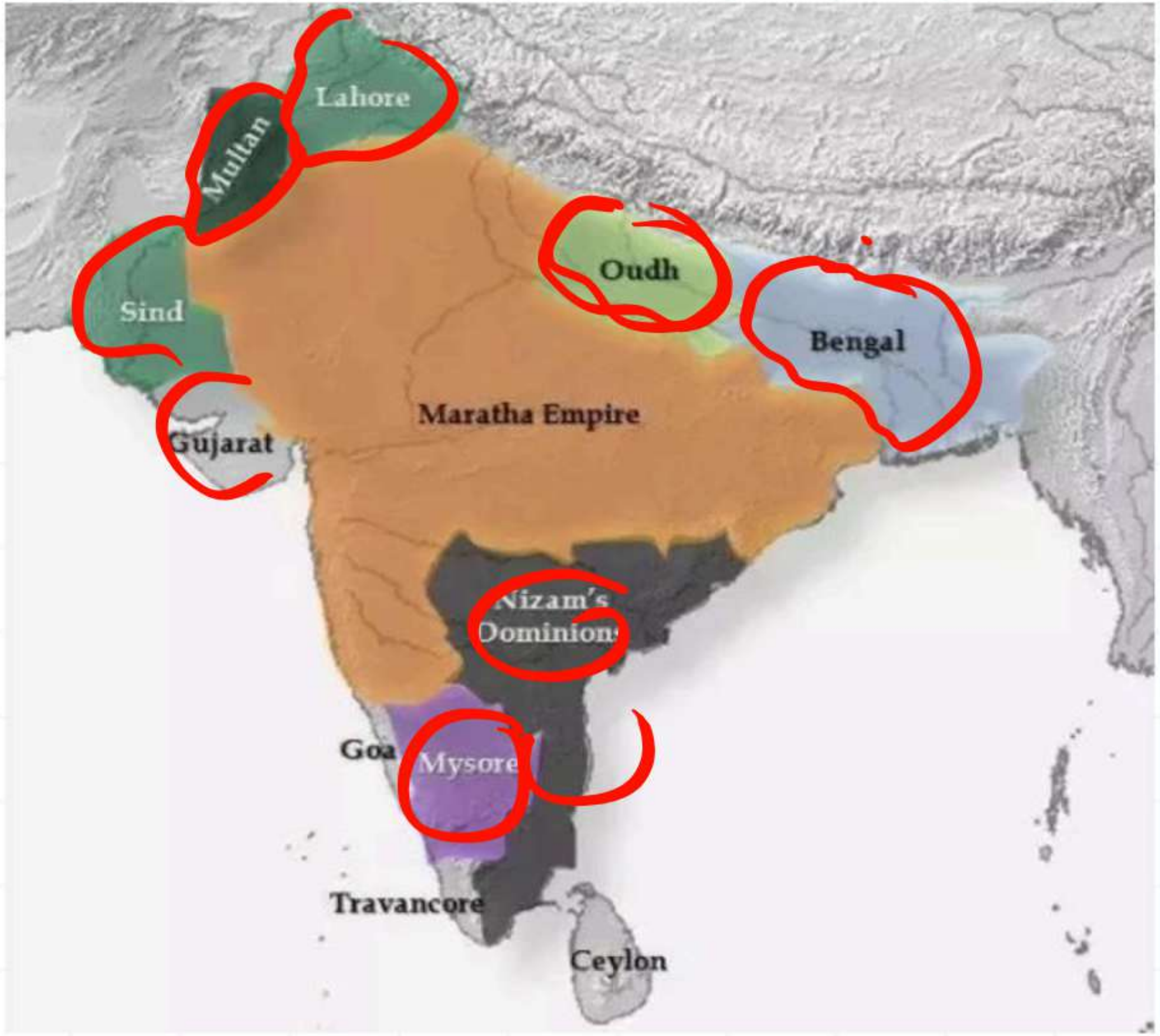
Lahore
Multan
Sind
Oudh
Bengal
Gujarat
Maratha Empire
Nizam's
Dominions
Goa
Mysore
Travancore
Ceylon

1630 → 1656
1640 1650 1653

SHAJI BHONSLE

Chhatrapati Shivaji Maharaj

- Sambhaji
  - Shahu

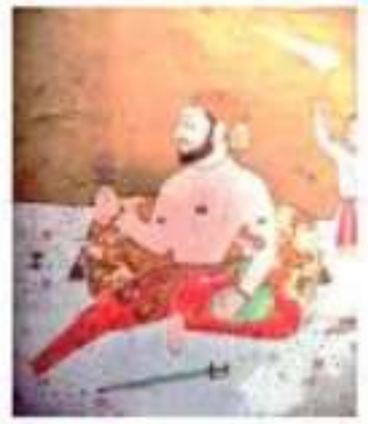

- Rajaram I
  - Shivaji II
    - Rajaram II

Bhosle, Gayakwad
Sindhia, Holker

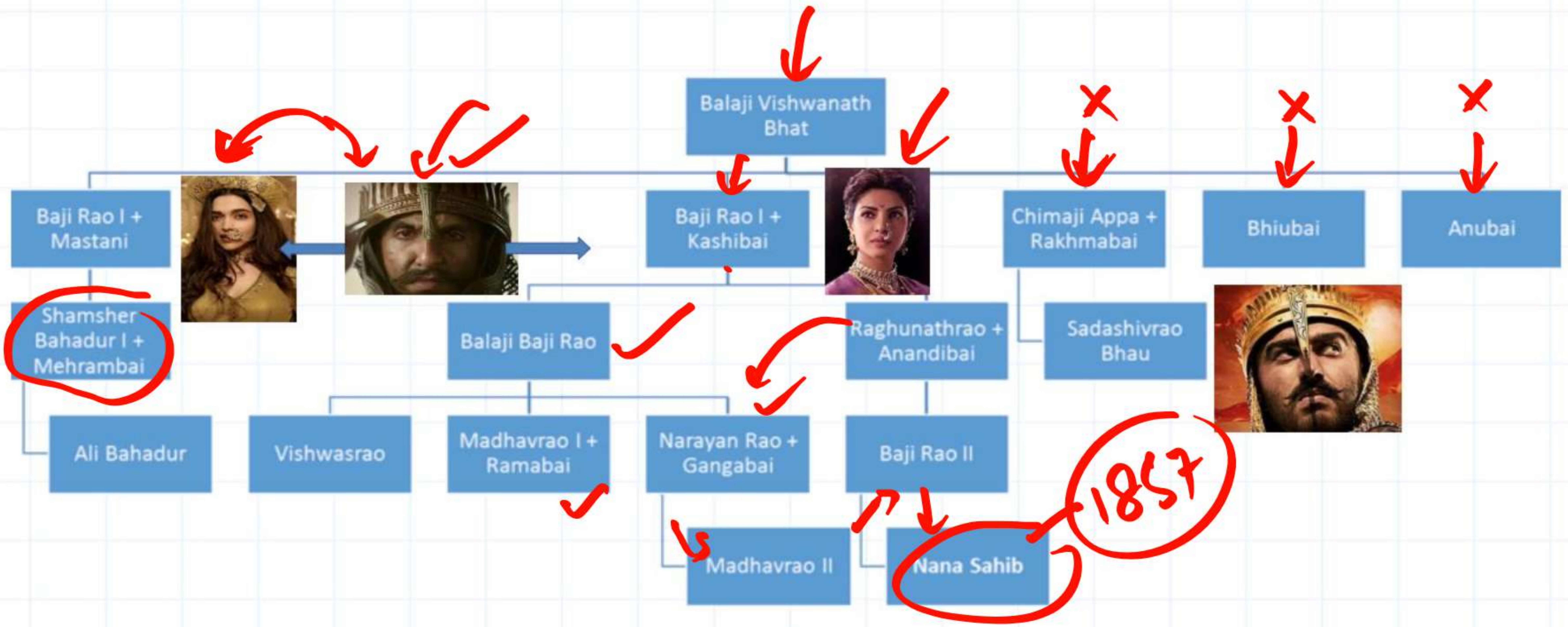

Balaji Vishwanath Bhat
Baji Rao I + Mastani
Baji Rao I + Kashibai
Chimaji Appa + Rakhmabai
Bhiubai
Anubai
Shamsher Bahadur I + Mehrambai
Balaji Baji Rao
Raghunathrao + Anandibai
Sadashivrao Bhau
Ali Bahadur
Vishwasrao
Madhavrao I + Ramabai
Narayan Rao + Gangabai
Baji Rao II
Madhavrao II
Nana Sahib
1857

Emergence of Marathas

- The Marathas emerged as a formidable power in the 17th century in the Deccan region (modern-day Maharashtra). / मराठा 17वीं शताब्दी में दक्कन क्षेत्र (आधुनिक महाराष्ट्र) में एक दुर्जेय शक्ति के रूप में उभरे।
- Founder: Chhatrapati Shivaji Maharaj (1630–1680), who established Hindavi Swarajya by challenging Mughal and Bijapur rule. / संस्थापक: छत्रपति शिवाजी महाराज (1630-1680), जिन्होंने मुगल और बीजापुर शासन को चुनौती देकर हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की।
- Geographical Extent: Initially centered in Maharashtra, the Maratha influence expanded to parts of Karnataka, Madhya Pradesh, and beyond. / भौगोलिक विस्तार: प्रारंभ में महाराष्ट्र में केंद्रित, मराठा प्रभाव कर्नाटक, मध्य प्रदेश और उसके बाहर के कुछ हिस्सों तक फैल गया।
- Coronation & Title: Shivaji assumed the title Chhatrapati in 1674 at Raigad Fort, marking the formal establishment of the Maratha Empire/ राज्याभिषेक और उपाधि: शिवाजी ने 1674 में रायगढ़ किले में छत्रपति की उपाधि धारण की, जिससे मराठा साम्राज्य की औपचारिक स्थापना हुई।

SHIVAJI MAHARAJ: ARCHITECT OF MARATHA EMPIRE'S RISE AND TRIUMPH (1630-1680)

- Born at Shivneri fort./ शिवनेरी किले में जन्मे।
- Father Shahaji Bhosle initially served Nizam ruler of Ahmednagar. Later he joined the Bijapur/ पिता शाहजी भोसले ने शुरुआत में अहमदनगर के निज़ाम शासक की सेवा की। बाद में वे बीजापुर में शामिल हो गए।
- Mother Jijabai, initial teacher of Shivaji Maharaj./ माता जीजाबाई शिवाजी महाराज की प्रारंभिक गुरु थीं।
- He inherited the jagir of Poona from his father in 1637. / उन्हें 1637 में अपने पिता से पूना की जागीर विरासत में मिली।
- At the age of 16 he captured the Torna fort, followed by many more forts./ 16 साल की उम्र में उन्होंने तोरणा किले पर कब्जा कर लिया, और उसके बाद कई और किले जीते।
- He created an independent Maratha kingdom with Raigad as its capital/ उन्होंने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाकर एक स्वतंत्र मराठा राज्य की स्थापना की।
- At the Battle of Pratapgarh (1659) he killed Afzal Khan (Adil shah's general)/ प्रतापगढ़ के युद्ध (1659) में उन्होंने अफ़ज़ल खान (आदिल शाह के सेनापति) को मार डाला।

- The Battle of Pavan Khind occurred on July 13, 1660, with Maratha leaders facing Siddi Masud of the Bijapur Sultanate./ पावन खिंड का युद्ध 13 जुलाई, 1660 को हुआ था, जिसमें मराठा नेताओं का सामना बीजापुर सल्तनत के सिद्दी मसूद से हुआ था।
- The battle resulted in the defeat of the Marathas but the Bijapur Sultanate did not accomplish its overall objectives. / इस युद्ध में मराठों की हार हुई, लेकिन बीजापुर सल्तनत अपने समग्र उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पाई।
- Ghod Khind was later referred to as Pavan Khind./ घोड़ खिंड को बाद में पावन खिंड कहा गया।

- **Aurangzeb called Chhatrapati Shivaji Maharaj and his son Sambhaji to his court in Agra in 1666.** / औरंगज़ेब ने 1666 में छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके पुत्र संभाजी को आगरा में अपने दरबार में बुलाया।
- **During the proceedings, Chhatrapati Shivaji was dishonoured and subsequently placed under house arrest.** / कार्यवाही के दौरान, छत्रपति शिवाजी का अपमान किया गया और बाद में उन्हें नज़रबंद कर दिया गया।
- **However, on August 17, 1666, Chhatrapati Shivaji Maharaj escaped with his son Sambhaji.**/ हालाँकि, 17 अगस्त, 1666 को छत्रपति शिवाजी महाराज अपने पुत्र संभाजी के साथ भाग निकले।

- Treaty of Purander (1665)/ पुरंदर की संधि (1665)
    - Signed between Raja Jai Singh (under Aurangzeb) and Shivaji./ राजा जय सिंह (औरंगज़ेब के अधीन) और शिवाजी के बीच हस्ताक्षरित।
    - Shivaji ceded some forts to Mughals & visited Agra to meet Aurangzeb./ शिवाजी ने कुछ किले मुगलों को सौंप दिए और औरंगज़ेब से मिलने आगरा गए।
- He defeated Mughals in Battle of Salher (1672). He was crowned & assumed the title Maharaja Chhatrapati in 1674 at Raigad fort./ उन्होंने सलहेर के युद्ध (1672) में मुगलों को हराया। 1674 में रायगढ़ किले में उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने महाराजा छत्रपति की उपाधि धारण की।
- He died in 1680 / 1680 में उनका निधन हो गया।

रायगढ़ किला

SHIVAJI'S ADMINISTRATION

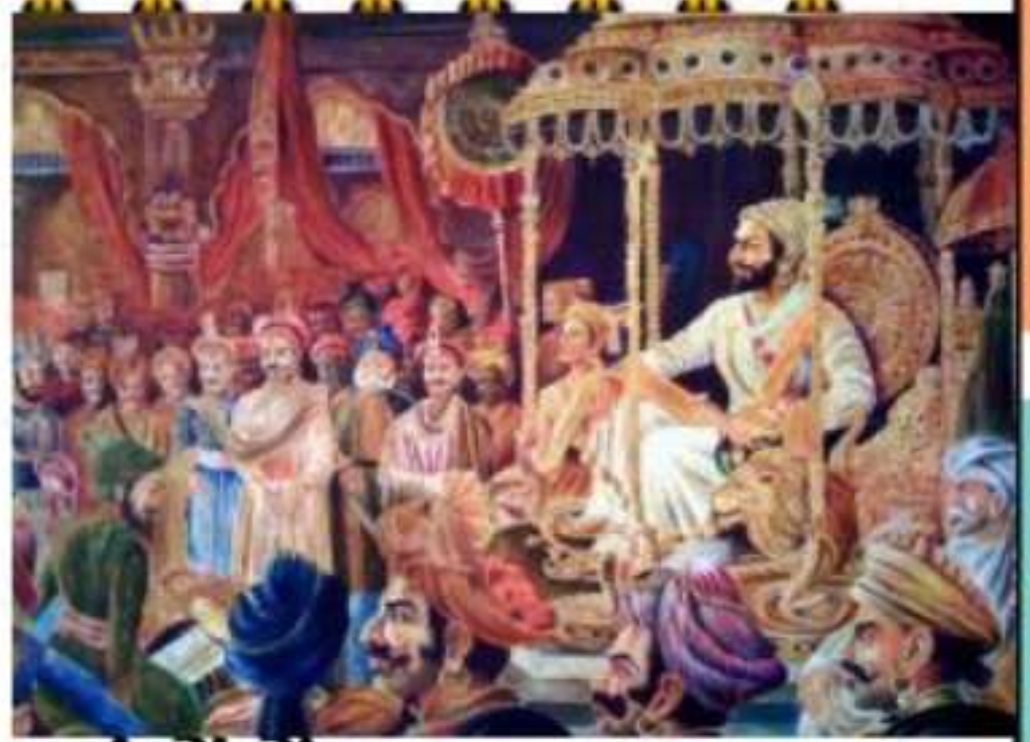

- He divided the territory into three provinces. Provinces were divided into Prants which were subdivided into Parganas or Tarafs./ उन्होंने क्षेत्र को तीन प्रांतों में विभाजित किया। प्रांतों को प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिन्हें परगना या तरफ़ में विभाजित किया गया था।
- Shivaji had well organized Army & Navy. The regular army was called Paga, while the loose auxiliaries called silahdars & were supervised by havildars./ शिवाजी के पास अच्छी तरह से संगठित सेना और नौसेना थी। नियमित सेना को पगा कहा जाता था, जबकि ढीले सहायक बलों को सिलहदार कहा जाता था और उनकी देखरेख हवलदार करते थे।
- He was assisted by a council of ministers called "Ashtapradhan" Mandal./ उन्हें "अष्टप्रधान" मंडल नामक मंत्रिपरिषद द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।

प्रांत (Province)

- Pargana (Parganadar)
- Taraf (Tarafdar)

Army

Havildar

↑

Siladar

↑

Paga (पैदल)

Ashtapradhan

Post / पद	Function / कार्य
Peshwa (Mukhya Pradhan) / पेशवा (मुख्य प्रधान)	Finance & general administration. Later became prime minister / वित्त व सामान्य प्रशासन। बाद में प्रधान मंत्री बने
Senapati (Sar-i-Naubat) / सेनापति (सर-ए-नौबत)	Military commander / सैन्य प्रमुख
Majumdar (Amatya) / माजुमदार (अमात्य)	Accountant General / महालेखाकार
Waqeanavis (Mantri) / वक़ेनवीस (मंत्री)	Intelligence, posts and household affairs / खुफ़िया कार्य, डाक व आंतरिक कार्य
Sachiv (Surnavis) / सचिव (सुरनवीस)	Correspondence / पत्राचार
Dabir (Sumant) / दाबीर (सुमंत)	Foreign minister & Master of ceremonies / विदेश मंत्री एवं समारोह प्रमुख
Nyayadhish / न्यायाधीश	Justice / न्याय
Panditrao (Sadar) / पंडितराव (सदार)	High Priest, managing internal religious matters / उच्च पुजारी, धार्मिक मामलों का प्रमुख

Revenue system of Maratha Empire

- The revenue system of Shivaji was based on that of Malik Amber of Ahmednagar./ शिवाजी की राजस्व प्रणाली अहमदनगर के मलिक अंबर की प्रणाली पर आधारित थी।
- Jagirdari abolished and introduced Ryotwari system./ जागीरदारी प्रथा समाप्त की गई और उसकी जगह रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू की गई।
- Land was measured using measuring rod called Kathi./ भूमि का मापन काठी नामक मापदंड से किया जाता था।
- Discouraged revenue farming/ शिवाजी ने राजस्व खेती को हतोत्साहित किया।
- Chauth (1/4th of land revenue) paid to Marathas to avoid Maratha raid./ चौथ (भूमि राजस्व का 1/4 हिस्सा) मराठों को मराठा छापों से बचने के लिए दिया जाता था।
- Sardeshmukhi was additional levy of ten percent (1/10 of standard land revenue) on lands over which Marathas claimed hereditary rights./ सरदेशमुखी एक अतिरिक्त 10% कर था (मानक भूमि राजस्व का 1/10), उन भूमियों पर जिन पर मराठों का पैतृक अधिकार माना जाता था।
- Reduced the power of existing Deshmukhs and Kulkarnis./ शिवाजी ने मौजूदा देशमुखों और कुलकर्णियों की शक्ति कम कर दी।
- Appointed own revenue officer called Karkuns./ शिवाजी ने अपने राजस्व अधिकारी कारकून नियुक्त किए।

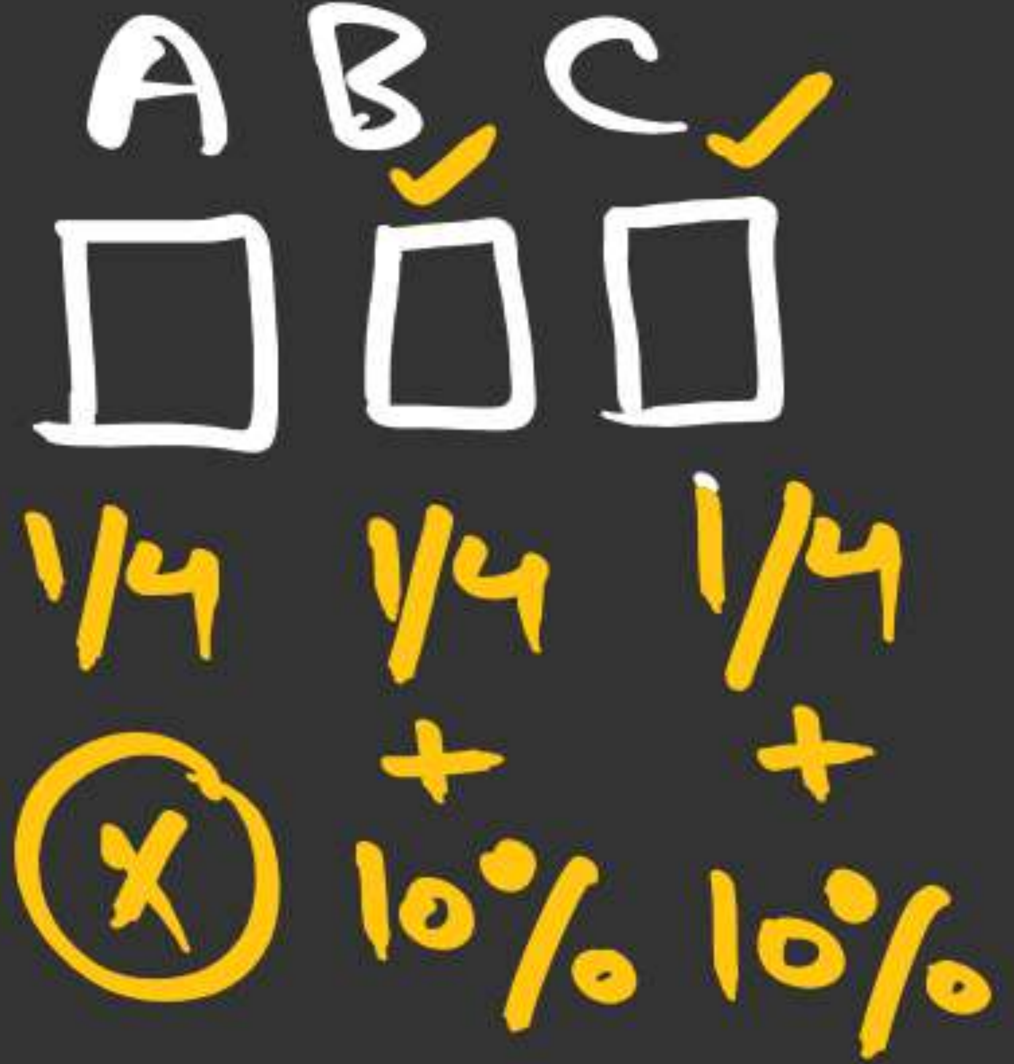

Chatrapati Shivaji

Tax

चौथ
(1/4 Tax)

सरदेशमुखी
(Land Extra 10% Tax)

1605-27 → Jahangir

Akbar

1596 → 99

Ahmadnagar

(Chand Biwi)

↓

Malik Amber